بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल-कासिम

अल-कासिम बुलेटिनः ०१

पेशकश

रबिउल अव्वल १४४२ हिजरी

बाबरी मस्जिद की शहादत मुसलमानों के लिए खतरे का संकेत

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

وَلَوۡلَا دَفۡعُ اللّٰہِ النَّاسَ بَعۡضَہُمۡ بِبَعۡضٍ لَّہُدِّمَتۡ صَوَامِعُ وَبِیَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ یُذۡکَرُ فِیۡہَا اسۡمُ اللّٰہِ کَثِیۡرًا ؕ وَلَیَنۡصُرَنَّ اللّٰہُ مَنۡ یَّنۡصُرُہٗ ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَقَوِیٌّ عَزِیۡزٌ

अनुवादः और यदि अल्लाह लोगों के एक ग्रोह (के शर) को दूसरे के द्वारा नहीं हटाता तो खानकाहें, गिरजाघरें, इबादतघरें और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का बहुत अधिक जिक्र किया जाता है सब गिरा दी जातीं, अल्लाह जरूर उनकी सहायता करेगा जो उस (के धर्म) की सहायता करेंगे। निसंदेह अल्लाह बड़ी शक्तिशाली और बड़े सत्ता वाला है। (सुरह हज आयत सं० ४०)

३० सितंबर बुधवार को लखनऊ की एक विशिष्ट सीबीआई अदालत ने ६ दिसंबर १९९२ को अयोध्या में बाबरी मस्जिद गिराए जाने के मामले में फैसला सुनाते हुए ४९ आरोपियों में से जीवित रहने वाले ३२ में से सभी आरोपियों को बरी कर दिया। फलतः इस मामले में बीजेपी के सीनियर नेता लाल कृष्ण आडवाणी मुरली मनोहर जोशी और ओमा भारती सहित सभी आरोपी हिन्दुत्व के नेता बरी हो गए हैं।

न्यायधीश सुरेन्द्र कुमार ने २३०० पृष्ठों पर आधारित फैसले में कहा है कि विध्वंस योजना बद्ध (मंसूबाबंद) नहीं था, यह एक आकस्मिक घटना थी। आरोपियों के विरुद्ध कोई पक्का सबूत प्राप्त नहीं हुए, बल्कि आरोपियों द्वारा उत्तेजित भीड़ को नियत्रित करने की कोशिश की गई थी।

हालांकि इन हिन्दुत्व नेताओं की ओर से लोगों को भड़का कर घटना स्थल पर उनके हाथों से बाबरी मस्जिद को गिराने की असंख्य अनगिनत विडियोज इंटरनेट पर उपलब्ध हैं जब सेंट्रल इंटेलिजेंस इजेंसी ने यह विडियोज अदालत में पेश कीं तो जज ने निर्लजता के साथ उन्हें संशोधित विडियोज बताकर आयेाग की अधिसूचना को पूर्ण रूप से पीठ पीछे डालकर सभी विडियोज झुठलाकर उसे ठुकरा दिया।

वास्तव में हिन्दुत्व अदालत (न्यायालय) से न्याय की आशा करना एक प्रकार की मूर्खता और बेवकूफी है क्योंकि बाबरी मस्जिद विध्वंस मामले में फैसले से पहले जब राम मंदिर का फैसला निर्धारित कर लिया गया था और वहां राम मंदिर निर्माण का कार्य भी शुरू किया गया था तो फिर मस्जिद को ध्वस्त करने का क्या दोष बाक़ी रहता है?

ऐ मेरी प्यारी उम्मते मुस्लिमा!

यह घटनाएं सवभाविक नहीं है यह अलग थलग कोई दुर्घटना नहीं हैं वर्ष १८२२ में पहली बार राममंदिर के स्थान पर बाबरी मस्जिद निर्माण का दावा करना, २३

दिसंबर १९४९ को मस्जिद के केंद्रीय गुंबद के नीचे साधु संतों का राम और सीता की प्रतिमाओं का रखना, फिर मुसलमानों की ओर से उन प्रतिमाओं को हटाने का प्रयत्न करते समय सरकार की ओर से मस्जिद को विवादास्पद क्षेत्र घोषित करते हुए मस्जिद को बंद कर देना, २५ जनवरी १९८६ को राजीव गांधी का बाबरी मस्जिद को हिन्दू पंडितों के लिए खोल देना, ६ दिसंबर १९९२ को बीजेपी विश्व हिन्दू परिषद और शिव सेना की तरफदारी में पूर्व उप प्रधानमंत्री एलके आडवाणी, पूर्व केंद्रीय मंत्री मुरली मनोहर जोशी, मध्य प्रदेश का पूर्व मुख्य मंत्री ओमा भारती और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह सहित अन्य कई हिन्दू नेताओं की उपस्थिति में पुलिस इंतजामिया की सहायता और निष्क्रीय भाव से बाबरी मस्ज़िद को ध्वस्त करना ९ नवम्बर २०१९ को बाबरी मस्ज़िद को ध्वस्त करके राम मन्दिर निर्माण का सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का एलान, और मोदी की उपस्थिति में इसी साल ५ अगस्त को करोना की स्थिति में ही भूमि पूजन और राम मंदिर निर्माण का संगे बुनियाद रखना, और विगत ३० सितंबर म्को बाबरी मस्ज़िद विध्वंस मामले के सभी आरोपियों को सीबीआई अदालत की ओर से सम्मान के साथ बरी कर देना- यह सब योजनाओं के अंतर्गत हुआ।

इन सभी क्रियाकलापों द्वारा वह एक विशेष उद्देश्य की ओर बढ़ रहे हैं। वह यह है कि पूरे भारत में रामराज्य स्थापित करना है। उसका स्पष्ट सबूत ११ दिसम्बर २०१९ को होने वाले विवादास्पद सीएए की मंजूरी है। क्योंकि ऐसा करके वह पिछड़े मुसलमानों को नागरिकता से वंचित करके रामराज्य के लिए मार्ग समतल कर रहे हैं।

हमें याद रखना चाहिए कि इन हिन्दू धोखेबाजों का निशाना केवल हमारी बाबरी मस्जिद ही नहीं, बल्कि हर गली की हर मस्जिद पर उनका निशाना है। जैसा कि हमने इसी वर्ष फरवरी के दंगों में देखा है। उन्होंने देहली में मस्जिदों के मीनारों पर हिन्दुत्व के झंडे लटकाए, मस्जिद के भीतर बम रख कर धमाके से मस्जिद को उड़ा दिया। वह अपने मिशन की तैयारी पूरी कर चुके हैं। वह अपना रंग बदलते रहेंगे जब तक वह अपना मिशन पूर्ण न कर लें। और उनका मिशन है भारत को मुसलमानों से खाली करवाना या मुसलमानों को वंचित वर्ग में परिवर्तित करना। उनकी यह दुश्मनी हमारे ईमान से है, उनकी दुश्मनी हमारे कलमे से है, उनकी दुश्मनी हमारी नमाजों से है, उनकी यह दुशमनी हमारे अस्तित्व से है।

ऐ मुहम्मद बिन कासिम और महमूद गजनवी के जानशीन!

बाबरी मस्जिद से संबंधित इन अदालती फैसलों की निरंतरता ने लोकतंत्र के सपनों में रहने वाले मुसलमानों के लिए यह बात साबित कर दी है कि भारत में हम मुसलमान कितने ही लोकतंत्र, शांति, और आपसी भाईचारा पर विश्वास रखते रहें, कांग्रेस और बीजेपी बाह्य मतभेद के बावजूद हिन्दू होने के नाते अपने रामराज्य के लिए काम करते रहेंगे।

हमें याद रखना चाहिए की हम अगरचे हज़ार वर्षों से हिन्दुओं के साथ शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत किए लेकिन कभी भी गवभक्त हिन्दुओं के दया और कृपा पर नहीं, बल्कि शासक के रूप में रहे हैं। केवल हमारे जिहाद को छोड़ देने के कारणवश आज नापाक हिन्दु चूहों का भेस बदलकर हमारे पूर्वजों की सरजमीन में ही हमारे साथ शेरों के समान व्यवहार कर रहे हैं। यदि आज भी हम इनके विरुद्ध पुनः खुले आम जिहाद का एलान करके शस्त्र नहीं उठाते हैं तो यह केवल बाबरी मस्जिद ही नहीं, बल्कि भारत में भारतीय मुसलमानों के ईमान व आस्था का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा।

अतः अब और आलस नहीं, और ला परवाही का समय नहीं है। हमारी लापरवाही की नींद टूटने के लिए और कितने बाबरी, और कितने गुजरात, मुजफ्फर नगर, आसाम या देहली देखने की जरूरत है? अतः ऐ भारतीय मुसलमान! जागों, चयन करें अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान के मार्ग जिहाद को।